School of Studies in Literature & Languages

Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C. G.) 492010

The department of Linguistics & Langusges was started by the Vice-Chancellor Dr. Babu Ram Saxena in 1965. The department was then headed by Dr. R. C. Mehrotra who served the department for 28 years. Currently the School of Studies in Literature & Languagees is headed by Prof. Keshari Lal Verma. After the emergence of School of Studies in English and School of Studies in Hindi, the School of Studies in Linguistics and Languages has been changed to'School of Studies in Literature and Languages' as per the decision of the Coordination Committee in the year 2001. Since then the classes of Linguistics, Hindi, and English have been run smoothly.

The School of Studies in Literature & Language serves as nucleus mainly for the maintenance and development of Languages and Literatures through teaching, intra and interdisciplinary research and project. The output of research and projects draws the attention of Languages-planners of Chhattisgarh. The school has been constantly engaged in training the youth in strengthening Hindi, English, and Chhattisgarhi for their Practical as well as academic purposes. The objectives of the programmes run by the School are to enrich the students with Linguistics and literary competence so as to enable them to perform efficiently in different domains.

Courses run by the SoS in Literature & Languages

Name in the Courses	Subject	**Intack capacity**
M.A.	Linguistics	20 + 20
	English	30 + 30
	Hindi	20 + 20
	Chhattisgarhi	40 + 40
M.Phil.	Linguistics	10
	English	10
	Hindi	10
Diploma in European & Asian Languages	English	30
	French	30
Certificate Course	Translation	30

Choics Based Coures	Linguistics
	English
	Hindi
	Chhattisgarhi
Ph.D.	Linguistics
	English
	Hindi
D. Lit.	Linguistics
	Hindi

Linguistics

Language is an essential part of human life. A Society without language is inconceivable. Language is the most appropriate and efficient medium of communication. As language exists in society, it is a subject of humanites but it deals with its sound, structure and meaning it becomes 'Science'. Linguistics covers all those areas that deals with the subjects of language acquisition and language teaching. It also enquires how the change in the modern scenario affects language.

The School has produsd 5 D. Litt., 99 Ph.D., & 316 M.Phil. in Linguistics till date. Total Ph. D. Student-24.

Diploma/Certificate Courses

Along with the research activites and P.G. courses, Diploma and Certificate courses are also a part of the curriculum. Diploma in European and Asian Languages includes teaching of English and French. The purpose of this program is to augment proficiency of students in English and foreign languages currently there is a growing demand of people with working knowledge in foreign languages in different professions. The department has produced Diploma holders 124 in Phonetics and Indian Languages, 1965 in English,.....in French, 141 in Russion, 47 in German, 06 in Telagu, 17 in Hindi, 32 in Urdu and 08 in Arabic till date.

English

From its establishment (1965) the Teaching Department commenced with Linguistics as the only subject offering Post Graduate course. In the due course of time, it was realised that the department had been lacking a vital component of academic studies i.e. English Language and Literature. There was a need and growing demand for the integration of English in the curriculum which was fulfilled with the commencement of M.A. (English) in 1991 and M.Phil. (English) in 1994.

The courses in English have achieved remarkable success. The School has produced 23 Ph.D. And 280 M.Phil. till date. English helps in a comprehension of the modern multicultural global world. The School continues to import its share in the development of Chhattisgarh state by paving the way for success and achievement of aspirations and goals in all fields.

हिंदी

साहित्य एवं भाषा–अध्ययनशाला हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन हेतु राज्य की प्रतिष्ठित अध्ययनशाला है। विनोद कुमार शुक्ल, निर्मल वर्मा, विद्यानिवास मिश्र, अशोक बाजपेयी, पुरूषोत्तम अग्रवाल जैसे हिंदी के मुर्धन्य साहित्यकारों एवं ओजस्वी वक्ताओं के व्याख्यान से इस अध्ययनशाला की गरिमा में श्रीवृद्धि हुई।

स्थापना के बाद से ही हिंदी को सहज, सरल बनाने एवं विस्तार देने की दिशा में अध्ययनशाला का उत्तरोत्तर प्रयास रहा है। विद्यार्थियों को नेट, सेट, एवं जे. आर. एफ. के लिए तैयार करने, समय की माँग के अनुरूप राजभाषा प्रशिक्षण, प्रयोजनमूलक हिंदी, भारतीय साहित्य, लोक साहित्य का पाठ्यक्रम में समावेश कर भाषा को विविध क्षेत्रों में परिभाषित करना भी उद्देश्य रहा है। मध्यकालीन, रीतिकालीन, आधुनिक हिंदी साहित्य, लोक साहित्य, काव्यशास्त्र का तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक, समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक परिवेश में शोध–कार्य अध्ययनशाला का ध्येय है।

विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की जिज्ञासा में वृद्धि, उनके अध्ययन को गुरुता प्रदान करने के साथ ही शिक्षकों के शिक्षण–कौशल एवं विचारों की अभिव्यक्ति के लिए अध्ययनशाला में समय–समय पर परिसंवाद, संगोष्ठी, सम्मेलन एवं अन्य साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता रहा है। हिंदी भाषा एवं साहित्य को बहुआयामी रूप देने के साथ ही विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच एवं जागरूकता लाने तथा क्षेत्र की लोक–कलाओं को जीवंत बनाए रखने की दिशा में इस अध्ययनशाला का विशेष योगदान रहा है।

सत्र 1998–99 से एम. ए. (हिंदी) की एवं वर्ष 2002–03 से एम. फिल. (हिंदी) की पढ़ाई प्रारंभ हुई। इस अध्ययनशाला से 1 डी. लिट्., 16 पी–एच.डी., एवं 140 एम. फिल. हो चुके हैं। वर्ष 2004 से हिंदी में पी–एच. डी. की उपाधि प्रदान किए जाने की शुरूआत हुई। वर्ष 2010 में डी. लिट्. की उपाधि प्रदान की गई। यहाँ एम. ए. में 40 (20+20) एवं एम. फिल. में 10 विद्यार्थियों के अध्ययन की सुविधा है। वर्तमान में यहाँ 14 शोधार्थी हिंदी साहित्य के विविध क्षेत्रों में शोध कार्य कर रहे हैं।

छत्तीसगढी

छत्तीसगढ़ प्रदेश की मातृभाषा छत्तीसगढ़ी है। इस समृद्ध भाषा का पहला व्याकरण सन् 1885 में लिखा गया। छत्तीसगढ़ प्रदेश के अस्तित्व में आने के बाद 28 नवंबर 2007 को छत्तीसगढ़ी भाषा को राजभाषा घोषित किया गया। छत्तीसगढ़ी भाषा, साहित्य, और संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के उद्देश्य से सन् 2013 में छत्तीसगढ़ी में एम. ए. पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया।

40 सीटों के साथ यह पाठ्यक्रम लगातार चार वर्षों से सफलतापूर्वक संचालित है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत छत्तीसगढ़ी साहित्य के अध्ययन के साथ–साथ इस भाषा के विकास एवं प्रगामी प्रयोग एवं अनुवाद के माध्यम से इसे समृद्ध करने का प्रयास किया जा रहा है। इन चार वर्षों में 277 छात्रों को एम. ए. की उपाधि प्राप्त हो चुकी है।

श्री लक्ष्मण मस्तुरिया, पद्मश्री सुरेंद्र दुबे, श्री दानेश्वर शर्मा, केयूर भूषण, श्रीमती निरूपमा शर्मा, श्री चंद्र कुमार चंद्राकर, डॉ. विनय पाठक जैसे अनेक छत्तीसगढ़ी भाषा के विद्वानों के व्याख्यान आयोजित किए गए। सन् 2013 में सात दिवसीय कार्यशाला 'छत्तीसगढ़ी का मानकीकरण' पर एवं पाँच दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें श्री श्यामलाल चतुर्वेदी, पद्मश्री सुरेंद्र दुबे, श्री दानेश्वर शर्मा, प्रो. राजेंद्र मिश्र, पद्मश्री ममता चन्द्राकर, प्रो. वेद प्रकाश बटुक, पद्मश्री महादेव पाण्डेय, श्री नंद किशोर शुक्ल, श्री नरसिंह प्रसाद यादव सहित अनेक विद्वानों ने तथा जिज्ञासु छात्र–छात्राओं एवं शोधार्थी सहित 300 से अधिक लोगों अपने विचार रखे।

Faculty

1. Regular

Dr. Keshari Lal Verma
(Professor of Linguistics)
(Vice - Chancellor)

Dr. Shail Sharma
(Professor of Linguistics)

Dr. Madhulata Bara
(Assit. Professor of Hindi)

Guest Faculty

Dr. Harsh Sharma
(English)

Dr. Smita Sharma
(English)

Dr. Mrinalini Karmoker
(English)

Dr. Smt. Sonal Mishra
(English)

Dr. Aarti Pathak
(Linguistics)

Dr. Kaustubh Mani Dwivedi
(Hindi)

Dr. Saroj Chakradhar
(Hindi)

Dr. Kumudini Ghritlahre
(Hindi)

Shri Bratu Ram Dhruw
(Hindi)

Dr. Vibhasha Mishra
(Hindi)

(National seminar 2016)

साहित्य एवं
27 एवं 28
सेमिनार हॉल, कला भवन, भूतल,

साहित्य
स्थान : सेमिनार हॉल,

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़
राष्ट्रीय संगोष्ठी
और गाँधीवाद
प्रो. राजेश कुमार दुबे

साहित्य एवं भाषा-अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़
राष्ट्रीय संगोष्ठी
हिंदी साहित्य और गाँधीवाद
22, 23 एवं 24 अक्टूबर 2019
स्थान : प्रेक्षागृह, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर